Vikas Parakh-October-19.qxd 10/16/2019 10:26 AM Page 1

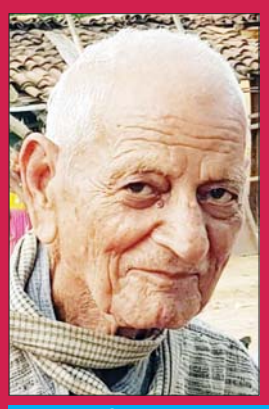

www.vikasparakh.com

छत्तीसगढ़ विषयक मासिक पत्रिका

विकास परख

● वर्ष- 5, ● अंक- 06 ● रायपुर, 1 अक्टूबर 2019 ● मूल्य -30 रुपए ● पृष्ठ- 32

विशेष पहल

निबंध प्रतियोगिता

विस्तृत जानकारी के लिए देखें पृष्ठ 30

विशेष

सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक

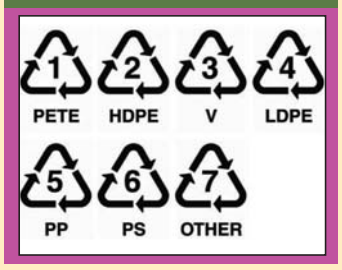

विषय क्रम

» छत्तीसगढ़ में गांधी जी

» जनजाति संस्कृति पुनांग तिंदाना

» छत्तीसगढ़ नगरीय प्रशासन

अंतर्राष्ट्रीय क्रेता-विक्रेता सम्मेलन

छत्तीसगढ़ के उत्पादों को दुनिया में पहचान दिलाने की पहल

छत्तीसगढ़ के कृषि, उद्यानिकी एवं वनोपज, सहित हैण्डलूम-कोसा आदि विविध उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहन एवं विक्रय को बढ़ावा देने के लिए रायपुर में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रेता-विक्रेताओं का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में 16 देशों के 57 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि एवं क्रेतागण तथा देश के विभिन्न राज्यों से 60 प्रतिनिधि एवं क्रेतागण ने हिस्सा लिया।

कंपनियों से ये हुए एमओयू

- छत्तीसगढ़ राज्य कृषि विपणन (मंडी) बोर्ड के साथ कृषि उत्पादों के विपणन के लिए बांग्लादेश फ्रेश फ्रूट्स इंपोर्टरस एसोसिएशन, बांग्लादेश एग्रो प्रोसेसर्स एसोसिएशन, ग्रीक फूड कॉरीडोर ग्रीस और यूरोप-इंडिया एग्रीकल्चर फोरम ने एम.ओ.यू. किए।
- हैण्डलूम वस्त्रों के लिए टाईटन कंपनी के ब्रांड तनीरा के साथ एम.ओ.यू. किया गया। कंपनी का यह ब्रांड प्राकृतिक रेशे से बुनी गयी साड़ियों और वस्त्रों के लिए कौशल उन्यन, मानिकीकरण और दस्तावेजीकरण के क्षेत्र में सहयोग करेगी।
- छत्तीसगढ़ हाथ करघा विकास एवं विपणन संघ के साथ चार एम.ओ.यू. किए गए। ये एम.ओ.यू. टाईटन कंपनी लिमिटेड, पेरामोन इंडस्ट्रीज प्रायवेट लिमिटेड, एक गांव ग्रुप टेक्नॉलाजी प्रायवेट लिमिटेड और संत रविदास मध्यप्रदेश हस्तशिल्प एवं हाथकरघा विकास निगम के साथ किए गए।

इन देशों में होगा निर्यात

अनेक देशों ने छत्तीसगढ़ के कृषि व वन उत्पादों का क्रय करने एमओयू किए-

ओमान

50 टन लाख,
200 मीट्रिक टन चिरौंजी,
200 मीट्रिक टन बेलफल,
200 मीट्रिक टन जामुन,
50 टन शहद,
2500 मीट्रिक टन फल इमली,
200 मीट्रिक टन महुआ फूल,
200 मीट्रिक टन साल शीड,
300 मीट्रिक टन प्रसंस्कृत कुटकी
300 मीट्रिक टन प्रसंस्कृत कोदो

जापान

10 मीट्रिक टन धनिया,
18 मीट्रिक टन काजू,
10 मीट्रिक टन अलसी
40 मीट्रिक टन लाल मसूर

नेपाल

एक लाख मीटर सिल्क
2 लाख मीटर काटन कपड़े
20 मीट्रिक टन शहद

पोलेण्ड

50 मीट्रिक टन अदरक

दुबई

15 मीट्रिक टन अमरूद,
सीताफल और हरी मिर्च

इन उत्पादों के खरीददार तैयार

नेकॉफ कंपनी द्वारा राज्य के विक्रताओं को विष्णुभोग चावल, दुबराज चावल, कोदो, कुटकी इत्यादि के क्रय आदेश दिए गए हैं।

500 मीट्रिक टन अमरूद,
1100 मीट्रिक टन अदरक,
1800 मीट्रिक टन केला,
200 मीट्रिक टन हल्दी,
500 मीट्रिक टन मक्का,
1000 मीट्रिक टन लीची,
600 मीट्रिक टन सीताफल,
50 मीट्रिक टन जामुन,
1100 मीट्रिक टन टमाटर,
50 मीट्रिक टन लघु धान्य फसल
12 मीट्रिक टन अलसी,

दंतेवाड़ा उपचुनाव देवती कर्मा जीतीं

दंतेवाड़ा उपचुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार देवती कर्मा ने अपने प्रतिद्वंदी भाजपा की ओजस्वी मंडावी को 11192 वोटों से हरा दिया है। इस परिणाम के बाद विधानसभा में बस्तर संभाग की सभी 12 सीटों पर कांग्रेस पार्टी का कब्जा हो गया है। भाजपा विधायक भीमा मंडावी की 9 अप्रैल को नक्सली हमले में हत्या के बाद दंतेवाडा सीट खाली हुई थी। दंतेवाड़ा उपचुनाव के लिए 23 सितंबर को मतदान हुआ था। तब 60.21 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने अधिकारी का प्रयोग किया था।

चुनाव में खड़े 9 में से 7 प्रत्याशी (भाजपा और कांग्रेस को छोड़कर) अपनी जमानत तक नहीं बचा सके। इनमें से 6 प्रत्याशी तो ऐसे भी हैं, जिन्हें नोटा (5779) से भी कम वोट मिले। इस बार मतदान में कुल 114606 वोट पड़े थे।

कब जब्त होती है जमानत राशि

जब कोई प्रत्याशी किसी भी चुनाव क्षेत्र में पड़े कुल वैध वोट का छठा हिस्सा हासिल नहीं कर पाता है तो उसकी जमानत राशि जब्त मानी जाती है।

किस प्रत्याशी को मिले कितने वोट

पार्टी	प्रत्याशी	कुल वोट
कांग्रेस	देवती कर्मा	50028
भाजपा	ओजस्वी मंडावी	38836
सीपीआई	भीमसेन मंडावी	7664
राकांपा	अजय नाग	3457
निर्दलीय	सुदरू राम कुंजाम	2545
गोंगपा	योगेश मरकाम	2119
आप	बल्लूरामभवानी	1533
छजकां	सुजीत कर्मा	1393
बसपा	हेमंत पोयाम	1252

संपर्क सूत्र- 7587776754
E-mail-
mail.vikasparakh@gmail.com

Vikas Parakh-October-19.qxd 10/16/2019 10:26 AM Page 24

सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक

सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ केंद्र सरकार 2 अक्तूबर से बड़ा अभियान शुरू कर रही है। इसके लिए कोई नए कानूनी प्रावधान करने की तैयारी नहीं ह, पुराने नियम ही जारी रहेंगे, जिनमें 50 माइक्रोन से पतली प्लास्टिक थैलियों आदि पर रोक रहेगी। पहले से प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम बने हुए हैं। उन्हीं के प्रावधानों को सख्ती से क्रियान्वित किया जाएगा। दो साल पूर्व ये नियम संसोधित भी किए गए थे। पहले 40 माइक्रोन से कम पतली थैलियों के इस्तेमाल पर रोक थी जिसे सरकार ने 50 माइक्रोन कर थोड़ा सख्त कर दिया था। यानी 50 माइक्रोन से पतली थैलियों या प्लास्टिक सामग्री के निर्माण, भंडारण एवं बिक्री पर रोक है। लेकिन इससे ज्यादा मोटी थैलियों पर रोक नहीं है।

क्या होता है सिंगल यूज प्लास्टिक?

चालीस माइक्रोमीटर (माइक्रॉन) या उससे कम स्तर के प्लास्टिक को सिंगल यूज प्लास्टिक कहते हैं। 6 प्लास्टिक प्रोडक्ट पर पूर्ण प्रतिबंध लग जाएगा प्लास्टिक बैग, कप, प्लेट, छोटी बोतल, प्लास्टिक स्ट्रा और कुछ टाइप की पैकिंग प्लास्टिक है। यह प्रतिबंध प्लास्टिक की मैन्युफैक्चरिंग के साथ उसके उपयोग और प्लास्टिक प्रोडक्ट के आयात पर होगा।

6 प्लास्टिक प्रोडक्ट के उपयोग पर प्रतिबंध से भारत में सालाना तौर पर खपत होने वाली 14 मिलियन टन में से मात्र 5 से 10 प्रतिशत पर ही रोक लगाई जा सकेगी। यह ना आसानी से नष्ट होता है और ना ही इसे रिसाइकिल किया जा सकता है।

कितना खतरनाक है सिंगल यूज प्लास्टिक?

इस प्लास्टिक की रसायनिक संरचना ऐसी होती है कि यह आसानी से नष्ट नहीं होता है। जमीन के अंदर दबाया गया प्लास्टिक मिट्टी के जरिये यह पानी में जाता है और फैलकर प्रदूषण फैलाता है। वहीं प्लास्टिक को जलाने से हवा प्रदूषित होती है।

सिंगल यूज प्लास्टिक को अगर जमीन के अंदर दबाकर नष्ट करने की कोशिश होती है तो यह नष्ट नहीं होता बल्कि कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटकर खतरनाक रसायन पैदा करता है। जो मिट्टी की उपजाऊ क्षमता को नुकसान पहुंचाता है। मिट्टी के जरिये यह खतरनाक जहरीला रसायन हमारे खाद्य पदार्थों और पानी में पहुंचता है, जिससे मानव शरीर को काफी नुकसान पहुंचता है। इससे मनुष्य की रोगों से लड़ने की क्षमता, जनन क्षमता प्रभावित होती है और यह कैंसर का भी कारण बनता है।

सिंगल यूज प्लास्टिक सिर्फ इंसानों और पर्यावरण के लिए ही नहीं पशुओं के लिए भी घातक है। सड़कों पर बिखरे प्लास्टिक को खाकर छुट्टा गाय, भैंस और कुत्ते बीमार होते हैं। कई बार इन पशुओं के पेट से किलो के हिसाब से प्लास्टिक निकलता है। वहीं समुद्र में फैल रहे प्लास्टिक कचरे से समुद्र के जीव और मछलियां प्रभावित हो रहे हैं।

2022 तक पूर्ण प्रतिबंध का लक्ष्य

सरकार ने 2022 तक पूर्ण प्रतिबंध का लक्ष्य रखा है, 2018 में पर्यावरण दिवस के अवसर पर सरकार ने लक्ष्य निर्धारित किया था कि 2022 तक देश से सिंगल यूज प्लास्टिक को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाएगा। इसके बाद से सरकार अपने स्तर पर लगातार प्रयास करती रही है, लेकिन सख्ती के अभाव में अभी तक इसका कोई असर होता नहीं दिखा। अब जब प्रधानमंत्री ने लाल किले से यह बात उठायी है तो पर्यावरण संरक्षण पर काम करने वाले लोगों को उम्मीद है कि सरकार प्लास्टिक बैन के लिए कोई निर्णायक कदम उठाएगी।

कौन सा प्लास्टिक है हानिकारक,

हम रोजाना की जिंदगी में प्लास्टिक से बनी चीजों पर ही निर्भर हैं। फिर वह खाना रखने के लिए लंचबॉक्स हो, पानी की बोतल या प्लास्टिक के बर्तन। प्लास्टिक के पीछे ISI लिखा होता है या फिर एक

प्लास्टिक के रेजिन आइडेंटिफिकेशन कोड (आरआईसी)

सिंबल होता है। दरअसल, अच्छी क्वॉलिटी के प्रॉडक्ट पर इस चिन्ह का होना जरूरी है। यह मार्क ब्यूरो ३ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड (BIS) जारी करता है। इससे पता लगता है कि उत्पादों की शुद्धता अच्छी है। इन चिन्हों को रेजिन आइडेंटिफिकेशन कोड सिस्टम (RIC) कहते हैं। इसमें तिकोने के बीच में नंबर भी होते हैं। इन नंबरों से ही पता चलता है कि आपके हाथ में जो उत्पाद है, वह किस तरह के प्लास्टिक से बना है।

पॉलिथीन टेरिफ्थेलैट

(polyethylene terephthalate-PET) यह प्लास्टिक टेरिफ्थेलैट से बनी होती है। सॉफ्ट ड्रिंक, पानी, केचप, अचार, जेली, पीनट बटर जैसे सॉलिड लिक्विड को प्लास्टिक की बनी ऐसी बोतलों में ही रखा जाता है। यह अच्छा प्लास्टिक होता है। PET अपनी पैकेजिंग में रखे सामान को सुरक्षित रखता है। अमेरिका के फूड एंड ड्रग ऐडमिनिस्ट्रेशन (FDA) ने इसे खाने-पीने की चीजों की पैकेजिंग के लिए स्वच्छ बताया है।

हाई डेन्सिटी पॉलिथीन

(High-density polyethylene- HDPE) यह हाई-डेंसिटी पॉलिथीन से बना होता है। दूध, पानी, जूस के बोतल, योगर्ट की पैकेजिंग, रिटेल बैग्स आदि बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है। एचडीपीई प्लास्टिक के खाने-पीने की चीजों में मिक्स होने से कैंसर या हॉर्मोंस को नुकसान होने की आशंका न के बराबर रहती है। हल्के वजन और टिकाऊ होने की वजह से यह बेहद प्रसिद्ध है।

पॉलीविनाइलिडिन क्लोराइड

(Polyvinylidene chloride- PVDC) यह प्लास्टिक पॉलीविनाइल डीन क्लोराइड से बना होता है। पीवीडीसी का इस्तेमाल खाने-पीने के सामान, दूध से बने उत्पाद, सॉस, मीट, हर्बल उत्पाद, मसाले, चाय और कॉफी आदि की पैकेजिंग में प्रयोग होता है। यह प्लास्टिक इतना मजबूत होता है कि लीक नहीं हो सकता। इसकी वजह से इसमें फूड पैकेजिंग की जाती है।

लो डेंसिटी पोलीथाईलीन

(Low-density polyethylene -LDPE) यह प्लास्टिक लो-डेंसिटी-पॉलिथिलीन से बना है। इससे आउटडोर फर्नीचर, फ्लोर टाइल्स, शॉवर कर्टेन आदि बनते हैं। इसी से एलएलडीपीई बनती है, जिसे फूड पैकेजिंग के लिए अच्छा माना जाता है। यह जहरीला नहीं होता है। इससे सेहत को कोई नुकसान नहीं होता है।

पालीप्रोपेलीन

(Polypropylene - PP) यह प्लास्टिक पॉलीप्रोपेलीन से बना होता है। पी.पी से बोतल कैप, ड्रिंकिंग स्ट्रॉ, योगर्ट कंटेनर, प्लास्टिक प्रेशर पाइप सिस्टम आदि बनते हैं। यह प्लास्टिक किन्हीं और रसायनों के साथ जल्दी असर नहीं करता,इसलिए इसको सफाई करने के पदार्थ, प्राथमिक चिकित्सा उत्पाद की पैकेजिंग की जाती है।

पालीस्टाइरीन

(Polystyrene -PS) यह उत्पाद पॉलिस्टाइरीन से बना होता है। इससे बने उत्पाद पर छह नंबर दर्ज रहता है। फोम पैकेजिंग, फूड कंटेनर्स, प्लास्टिक टेबलवेयर, डिस्पोजेबल कप-प्लेट्स, कटलरी, सीडी, कैसेट डिब्बे आदि में इसे इस्तेमाल किया जाता है। यह फूड पैकेजिंग के लिए सुरक्षित होता है लेकिन इसको री-साइकल करना बहुत मुश्किल होता है। गर्म करने के दौरान इसमें से कुछ हानिकारक गैसें निकलती हैं। ऐसे में इसके अधिक इस्तेमाल से बचना चाहिए। ओ-टाइप (O) यह कई तरह के प्लास्टिक का मिश्रण होता है। इसमें खासतौर पर पॉलीकार्बोनेट (PC) होता है। इससे सीडी, सीपर, सनग्लास, केचप कंटेनर्स आदि बनते हैं। यह प्लास्टिक काफी मजबूत होता है। हालांकि कुछ एक्सपर्ट्स कहते हैं कि इसमें हॉर्मोंस पर असर डालने वाले बायस्फेनॉल (BPA) की मौजूदगी होती है। कई बार इस्तेमाल करने पर यह मानव शरीर के हार्मोंस को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए इसका इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। खाने-पीने की चीजें रखने के लिए PET, HDPE, LDPE और PP कैटिगरी का प्लास्टिक सही है। ये बेहतर फूड ग्रेड कैटिगरी में आते हैं। PDVC और O कैटिगरी के कंटेनर खाने में केमिकल छोड़ते हैं, खासकर गर्म करने के बाद। PS नंबर का भी इस्तेमाल कम ही करना चाहिए। इनमें खाने की चीजें ना रखें।

Vikas Parakh-October-19.qxd 10/16/2019 10:26 AM Page 28

मुख्य परीक्षा के अधिकांश प्रश्नों के उत्तर विकास परख के विभिन्न अंकों में

हाल में सम्पन्न सीजी पीएससी मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन विषय के ज्यादातर प्रश्न विकास परख द्वारा प्रकाशित विषयवार अतिरिक्तांक से पूछे गए। अनेक प्रश्न विकास परख के सम-सामयिक पर आधारित वार्षिकी - 2019 एवं विकास परख के मासिक अंकों में प्रकाशित आलेखों पर सीधे-सीधे आधारित थे। हमें प्रसन्नता है कि विकास परख के सम्पादकीय टीम का परिश्रम परीक्षार्थियों के लिए उपयोगी रहा। हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

विषय सामान्य अध्ययन - III (विषय कोड-05)

खण्ड -1 भाग-1

प्रश्न 1. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में तृतीयक क्षेत्र के अंतर्गत किन-किन सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है? **(अतिरिक्तांक पेज-6)**

प्रश्न 2. उदारीकरण से आप क्या समझते है? **(अतिरिक्तांक पेज-6)**

प्रश्न 3. सस्ती मुद्रा नीति का क्या आशय है?

प्रश्न 4. नीति आयोग पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न 5. जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार छत्तीसगढ़ मे अनुसूचित जनजातियों की अधिकतम प्रतिशत वाले 10 जिलों के नाम घटते क्रम मे लिखिये।

प्रश्न 6. वर्तमान छत्तीसगढ़ सरकार में विधायक निधि की राशि कितने से बढ़ाकर कितनी की गई है? **(मार्च -2019, मुख्यपृष्ठ)**

प्रश्न 7. 1 मार्च, 2019 से छत्तीसगढ़ मे कुल घरेलू बिजली खपत पर कितने यूनिट तक बिजली बिल आधा किया गया? **(मार्च -2019 परि. पेज- 2)**

प्रश्न 8. छत्तीसगढ़ का आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के आधार पर राज्य की प्रति व्यक्ति आय की जानकारी दीजिए।

भाग-2

प्रश्न 1. प्रायव्दीप भारत के सामान्य ढाल के विपरीत दिशा में बहने वाली प्रमुख नदियाँ कौन सी है और ऐसा क्यों है? **(अति. पेज- 43)**

प्रश्न 2. करेवा जमाव क्या है?

प्रश्न 3. भारत में किस दशक में जनसंख्या वृध्दि नकारात्मक रही और क्यों?

प्रश्न 4. नील क्रांति को परिभाषित कीजिए? **(अति. पेज- 54)**

प्रश्न 5. भारत में मैंग्रूव (कच्छ वनस्पति) का वितरण समझाइए? **(अति. पेज- 48)**

प्रश्न 6. भारत मे प्राकृतिक रबर उत्पादक क्षेत्र कौन से है? **(अति. पेज- 64)**

भाग-3

प्रश्न 1. कुसमी पाट के उच्चावच का वर्णन कीजिए। **(विशेषांक पेज- 16)**

प्रश्न 2. छत्तीसगढ़ में धारवाड़ शैल समूह कहाँ-कहाँ मिलता है? **(विशेषांक पेज- 18)**

प्रश्न 3. छत्तीसगढ़ मे गोपद नदी कहाँ प्रवाहित होती है?

प्रश्न 4. छत्तीसगढ़ में काली मिट्टी किन क्षेत्रों में पायी जाती है? **(विशेषांक पेज- 18)**

प्रश्न 5. कोरण्डम की प्रमुख विशेषताएँ एवं उत्पादन क्षेत्र लिखिए? **(विशेषांक पेज- 30, 39)**

प्रश्न 6. तुरतुरिया के महत्व पर प्रकाश डालिये?

प्रश्न 7. छत्तीसगढ़ में सीमांतक कार्यशील जनसंख्या में वृध्दि के कारण क्या है?

प्रश्न 8. बादलखोल अभयारण्य की विशेषताएँ लिखिए? **(विशेषांक पेज- 29)**

खण्ड -2 अंक - 4 भाग-1

प्रश्न 9. रेपो रेट एवं रिवर्स रेपो रेट में अंतर बताइए? **(अति. पेज- 15-16)**

प्रश्न 10. बेरोजगारी दर की गणना किस प्रकार की जाती है? भारत में वर्तमान बेरोजगारीं दर कितनी है? **(अतिरिक्तांक पेज- 12-14)**

प्रश्न 11. छत्तीसगढ़ सरकार ने कितने किसानों का कौन सा कर्ज माफ किया है? **(जनवरी 2019, मुख्य पृष्ठ)**

प्रश्न 12. छत्तीसगढ़ सरकार व्दारा चलाई जा रही सखी योजना पर प्रकाश डालिए?

प्रश्न 13. छत्तीसगढ़ में निवासरत प्रमुख अनुसूचित जनजातियों के नाम बताइए? **(जन.2019, पेज. 23, विशेषाँक 105)**

भाग-2

प्रश्न 7. शिमला और उटकमण्ड की ऊँचाई लगभग समान है, फिर क्यों शिमला जाड़े में उटकमण्ड की अपेक्षा सर्द और गर्मी में अपेक्षाकृत गर्म रहता है?

प्रश्न 8. भारत में अधिक शिशु मृत्यु दर के क्षेत्र कौल से हैं?

प्रश्न 9. भारत के पश्चिमी अपतटीय पेट्रोलियम के क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए? **(अति पेज - 58-59)**

भाग-3

प्रश्न 9. अबूझमाड़ की विशेषताएँ लिखिए? **(अप्रैल .2019,पेज -18)**

प्रश्न 10. छत्तीसगढ़ में मोटे अनाज के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र को बतलाइए।

प्रश्न 11. छत्तीसगढ़ राज्य में लिंगानुपात प्रतिरूप को बतलाइए? **(अति. पेज50, विशेषांकपेज- 43)**

प्रश्न 12. छत्तीसगढ़ मे चूना पत्थर के क्षेत्र व भण्डार को बतलाइए। **(अति. पेज74, विशेषांक-39)**

प्रश्न 13. बलौदाबाजार जिले में स्थित सीमेण्ट उद्योग का वर्णन कीजिए? **(अति.- पेज 74-75-76, विशे.- 42)**

खण्ड -3 भाग-1

प्रश्न 14. केन्द्र सरकार के गैर कर राजस्व के स्त्रोत कौन-कौन से हैं?

प्रश्न 15. सार्वजनिक व्यय में वृध्दि के प्रमुख कारणों पर चर्चा कीजिए?**(अति. पेज-17-18)**

प्रश्न 16. छत्तीसगढ़ में प्राथमिक कृषि सहकारी समिति के बारे में संक्षिप्त जानकारी दीजिए?

भाग-2

प्रश्न 10. उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र में नहरों व्दारा सिंचाई करने हेतु कौन सी भौगोलिक परिस्थितियाँ सहायक है? **(अति.पेज- 55)**

प्रश्न 11. परतीय अपरदन, रिल अपरदन और अवनालिका अपरदन का अंतर स्पष्ट करें। कंटूर बण्डिग व्दारा हम इन्हें कैसे नियंत्रित कर सकते है?

भाग-3

प्रश्न 14. उत्तरी महानदी बेसिन में पाये जाने वाली सहायक नदियों का संक्षिप्त विवरण कीजिए? **(अति. पेज-66-67)**

प्रश्न 15. छत्तीसगढ़ में जनगणना वर्ष 1981 से 2011 तक की जन्मदर की प्रवृत्ति को बतलाइए।

प्रश्न 16. छत्तीसगढ़ में चीनी उद्योग के विकास को समझाइए। **(अति.पेज-77)**

खण्ड -4 भाग-2

प्रश्न 12. भारत में वनों के प्रकार और जलवायु के संबंध की विवेचना कीजिये। **(अति. पेज- 47)**

भारत मे साक्षरता के प्रादेशिक विभिन्नता एवं उत्तरदायी कारकों की व्याख्या कीजिए।

खण्ड -5 भाग-1

प्रश्न 17. भारत सरकार के गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का मूल्यांकन कीजिए? **(अति. पेज-14)** अथवा

छत्तीसगढ़ में ग्रामीण वित्त के संस्थागत स्त्रोत कौन-कौन से हैं? वर्णन कीजिए। **(अति. पेज-35)**

भाग-3

प्रश्न 17. छत्तीसगढ़ में कृषकों के उत्थान के लिए राज्य की नरवा, गरूवा, घुरवा एवं बाड़ी योजनाओं को समझाइए? **(अति. पेज-31)** **अथवा**

छत्तीसगढ़ में वन सम्पदा पर आधारित उद्योगों की व्याख्या कीजिए। **(अति. पेज-77)**

मुख्य परीक्षा विशेष अतिरिक्तांक प्रश्न पत्र वार उपलब्ध

1. भाषा **मूल्य- 80/-**
3. भारत का इतिहास, संविधान, लोक प्रशासन **मूल्य- 80/-**
4. सामान्य विज्ञान, योग्यता परीक्षण, व्यवहारिक विज्ञान **मूल्य- 80/-**
5. भारतीय दर्शन एवं समाज शास्त्र **मूल्य- 80/-**
6. अर्थव्यवस्था एवं भूगोल **मूल्य- 80/-**
7. कल्याणकारी, विकासात्मक कार्यक्रम एवं कानून **मूल्य- 80/-**

अपने पते पर कुरियर या स्पीड पोस्ट सेवा के माध्यम से मंगाया जा सकता है।
संपर्क- 7587776754

Vikas Parakh-October-19.qxd 10/16/2019 10:27 AM Page 30

नव भारत की संकल्पना चुनौतियां और संभावनाएं

'नव भारत' गांधी, सुभाष, सरदार पटेल, अंबेडकर, नेहरू जैसे महान् लोगों के सपनों का भारत है। निकट भविष्य में गरीबी, भ्रष्टाचार, अपराध, आतंकवाद, नक्सलवाद इत्यादि व्याधियों से मुक्त और एकता,अखंडता, सहिष्णुता,समानता,बंधुत, वैज्ञानिकता,सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक क्षमताओं से युक्त सशक्त राष्ट्र को 'नव भारत' की संज्ञा दी गई है।

दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थित एवं उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति के रूप में पहचान बनाने वाली भारत अब नव सृजन के राह पर निकल पड़ा है।सन् 2014 में सत्ता परिवर्तन के साथ ही नवीन भारत की नींव रखी गई जिसका मूल उद्देश्य भारत का समावेशी विकास है, इस हेतु कई महत्वपूर्ण निर्णय एवं लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं।यथा गांधी जी के 150वीं जयंती पर स्वच्छ भारत की संकल्पना, भारत छोड़ो आन्दोलन के 75वीं वर्षगांठ पर गरीबी, गंदगी और आतंक भारत भारत छोड़ो का नारा दिया गया, सबके लिए आवास, पेयजल, हर घर को बिजली,स्वच्छ ईंधन की उपलब्धता इत्यादि सामाजिक सुविधाओं को सुनिश्चित किया गया है इसके साथ ही अधोसंरचनात्मक परिवर्तन जैसे डिजिटल इंडिया, वित्तीय समावेशन, आयुष्मान भारत निर्माण द्वारा प्रगतिशील सशक्त एवं स्वस्थ्य समाज की संकल्पना प्रस्तुत की गई है।

नव भारत सबका साथ सबका विकास, सर्वोदय और अंत्योदय जैसे आधारिय मंत्रों के साथ नव राष्ट्र निर्माण में की जा रही भगीरथी प्रयास है। भारत एक विकासशील राष्ट्र होने के नाते कई बुनियादी चुनौतियां यथा कुपोषण, बेरोजगारी, यौन अपराध, राजनीति का अपराधीकरण, भीड़ तंत्र, सम्प्रदायिकता, सीमा सुरक्षा, आर्थिक मंदी इत्यादि नव भारत के निर्माण में सुरसा के समान मुख फैलाये खड़ी है।

हाल के दिनों में कुछ प्राकृतिक प्रकोप जैसे बाढ़, सुखा, पेयजल समस्या, चक्रवात, दवानल आदि नवीन चुनौतियां भी सम्मुख है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है किन्तु भारत की शिक्षा व्यवस्था काफी पिछड़ी हुई है, शीर्ष 200 वैश्विक विश्वविद्यालयों में हमारी एक भी विश्वविद्यालय नहीं है यह भारत के पुन: विश्वगुरु बनने के राह में बाधक है। सोने की चिड़िया कहलाने वाली भारत में आज भी 25 करोड़ आबादी गरीबी रेखा से नीचे हैं। राष्ट्र के दामन पर 5करोड़ बाल श्रमिकों का दाग लगा है, इन बुराइयों पर जब तक विजय प्राप्त न किया जाए तब तक नव भारत की संकल्पना थोथा चना चबाने जैसा है।

भारत इन तमाम चुनौतियों के बावजूद लगातार अपनी अदम्य साहस, रचनात्मकता और प्रगतिशील कार्यशैली का परिचय देता आया है। नव भारत इन चुनौतियों को अवसर के रूप में देखता है। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया युवाओं के सपनों को पर देने का काम कर रहा है, तो स्किल इंडिया दक्ष मानव संसाधन के निर्माण में महती भूमिका निभा रहा है। खुले में शौच मुक्त भारत आज विश्व को पर्यावरण संरक्षण के दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। हाल ही में फिट इंडिया मूवमेंट और प्लास्टिक फ्री मूवमेंट ने विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। 2025 तक भारत को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का महत्वाकांक्षी निर्णय से संबद्ध अनेक आर्थिक सुधार किये गये हैं। किसानों के आय दोगुना करने के लिए कृषि क्षेत्र में व्यापक बदलावों को शामिल किया गया है। ये सभी कदम भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाने की दिशा उठाया गया है। विश्व ने योग की महत्ता को स्वीकार किया है, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा की जा रही बहुआयामी खगोलीय अनुसंधान के क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है। चंद्रयान-2 को विश्व ने सराहा है,यह भारत का पुन: विश्वगुरू बनने की ओर बड़ा कदम है। इस प्रकार भारत अनंत संभावनाओ वाला देश जो अब नव भारत के रूप में और अधिक प्रभावशाली व प्रगतिशील हुआ है, बहुआयामी विकास प्रारूप के आधार पर नव भारत की संकल्पना साकार करने के लिए 135 करोड़ जन आबादी तत्पर हैं। इस प्रकार जय-जवान, जय-किसान,जय-विज्ञान व जय-अनुसंधान को चरितार्थ करने वाला भारत विश्व में नव भारत के रूप में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हुआ है।

धिवेंद्र कुमार चंद्रा
जैजैपुर, सलनी,
जांजगीर-चांपा (छ.ग.)

इनके भी निबंध सराहनीय रहे

अभिषेक तिवारी
पटेल बेकरी, सुपेला मार्केट, भिलाई

अभिषेक चंद्राकर
वार्ड नं. 13, बेलसोंडा, जिला महासमुंद

निबंध प्रतियोगिता

प्रतियोगियों में रचनात्मक लेख की प्रगति को बढ़ाने राष्ट्रीय एवं छत्तीसगढ़ विषयों पर निबंध आमंत्रित किए जा रहे हैं। सर्वश्रेष्ठ निबंधों का विकास परख में प्रतिभागियों के नाम सहित प्रकाशित किया जाएगा एवं एक वर्ष का विकास परख नि:शुल्क दिया जाएगा। **(शब्द सीमा- 750)**

राष्ट्रीय- **1. एक देश, एक झंडा और एक संविधान**

छत्तीसगढ़- **1. सड़कों पर बे-मौत मरती गायें समाधान क्या?**

प्रतिभागी अपना निबंध माह के 25 तारीख तक व्हाट्स अप, ई-मेल से भेज सकते हैं, साथ ही अपना सम्पूर्ण पता, पासपोर्ट साइज फोटो व आधार कार्ड की प्रतिलिपि संलग्न करें।
कार्यालय पता- 29/1110, सेवती स्मृति आजाद चौक, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492001,
व्हाटअप नं. 7587776754 ई-मेल-mail.vikasparakh@gmail.com

बढ़ते शिशु मृत्यु दर एवं कुपोषण की समस्या, निदान

गरीबी और भुखमरी की स्याही से लिखी गई नियती का नाम कुपोषण है।

शरीर के लिए आवश्यक सन्तुलित आहार का लम्बे समय तक नहीं लिना ही कुपोषण है, जिसे दीर्घकालीन भूख या अदृश्य भूख कहते है। विडम्बना है जहाँ एक तरफ देश व प्रदेश में खाद्य सुरक्षा अधिनियम है पर कुपोषण वास्तव में घरेलू खाद्य असुरक्षा परिणाम है, जियति देखिए अनाज भण्डारण के अभाव में सड़ता है, चुहो, कीड़ो व्दारा नष्ट होता है या समुद्रों में डुबाया जाता है और दूसरी तरफ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा भूखे पेट सोता है। बच्चों और स्त्रियों में अधिकाँश रोगों का जड़ कुपोषण है। स्त्रियों में रक्ताल्पता या घेंघा रोग तथा बच्चों में सूखा रोग, रतौंधी तथा अंधत्व भई कुपोषण का परिणाम है।

विकसित राष्ट्रों की अपेक्षा विकासशील देशों में कुपोषण की समस्या विकराल है, जिसका प्रमुख कारण है, गरीबी। धन के अभाव में गरीब लोग पर्याप्त पौष्टिक चीजें जैसे दुध, फल, घी इत्यादि नहीं खरीद पाते और गरीबी ही एक मात्र कारण नहीं है, इसके साथ-साथ अज्ञानता व निरक्षरता भी है। जिसके चलते कम उम्र मे विवाह तथा माँ बनना छत्तीसगढ़ में हर तीन गर्भवती महिलाओं में से एक कुपोषण की शिकार होने के कारण रक्ताल्पता की शिकार होती है जबकि गर्भवती स्त्रियों को ज्यादा पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है। स्वच्छता का अभाव, भोजन की कमी और प्रसव केन्द्र में प्रसव न होने से मातृ व शिशु मृत्यु दर में वृधिद हुई है।

शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 जीवित जन्में शिशुओं मेंसे एक वर्ष या इससे कम उम्र में मृत बच्चों की संख्या है। केन्द्र सरकार के सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (एस.आर.एस.)ने रिपोर्ट जारी की है जिसमें छत्तीसगढ़ में शिशु मृत्यु दर प्रति हजार में 43 है। (आँकड़े सन् 2016 की स्थिति में)

2016-17 की स्थिति में- 38, 2017-18 की स्थिति में- 32 तथा 2018-19 की स्थिति में 25 (छत्तीसगढ़ राज्य सरकार व्दारा लक्ष्य योजना) आदिवासी बाहुल्य छत्तीसगढ़ में आदिवासी बच्चों की मृत्यु दर देश में चौथे स्थान पर है। पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर प्रति हजार में देश की स्थित 93.7 है तथा छत्तीसगढ़ की स्थिति 128.5 है। आँकड़ो मं पहले स्थान पर मध्यप्रदेश 140.7 दुसरे स्थान पर झारखण्ड 138.5 तथा तीसरे स्थान पर उड़ीसा 136 है।

छत्तीसगढ़ में बच्चों की मृत्यु का एक और आम कारण दस्त के कारण निर्जलीकरण है जहाँ अज्ञानता की चादर ओड़े लोगों को नमक और चीनी के घोल के बारे में जानकारी नहीं है। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि भारत में हर साल कुपोषण के कारण मरने वाले पाँच वर्ष के कम उम्र वाले बच्चों की संख्या दस लाख से ज्यादा है। पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर प्रति हजार तुलनात्मक आँकड़े- चीन 09, मैक्सिको- 29, ब्राजील- 36, मिश्र-41, इण्डोनेशिया-45, बांग्लादेश-77, भारत-93, पाकिस्तान- 109 तथा नाइजेरिया- 183 है। छत्तीसगढ़ में कुपोषण के आँकड़े दर्शाते है कि बीते पाँच वर्ष में 37 फीसदी से ज्यादा बच्चें कुपोषित है। राज्य में सरकारी योजनाओं के तहत जहाँ 454 करोड़ रू. कुपोषण मिटाने के लिए व्यय किये जाते है वहाँ साक्षर कहे जाने वाले जिलों का परिणाम गंभीरता को दर्शाता है। बिलासपुर 35 हजार बच्चे कुपोषित, राजनाँदगाँव 33 हजार, बलौदाबाजार 30 हजार तथा रायपुर 29 हजार कुपोषण के शिकार है। छत्तीसगढ़ में फूड सिक्योरिटी बिल दे में मॉडल है पर धरातलीय रूप में क्रियान्वयन न होने के कारण राज्य में 7-67 लाख से ज्यादा बच्चे कुपोषण का शिकार है।

कुपोषण के लक्षण- 1. वसा की कमी तथा शरीर की वृध्दि रूकना। 2. मांस पेशियों का ढीला हो जाना तथा झुर्रियां युक्त पीले रंग की त्वचा। 3. कार्य करने मे शीघ्र थकान तथा सांस लेने में दिक्कत। 4. मन में उत्साह का अभाव (अवसाद), तिड़चिड़ापन, घबराहट तथा शरीर में लाल चकते। 5. बाल रूखे, चमक रहित साथ ही चेहरा कांतिहीन व आँखों के चारों ओर वृत्त जैसा निशान। 6. श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या मे कमी तथा प्रचनन क्षमता में कमी।

ब्रेड, चांवल, आलू और स्टार्च युक्त खाद्य पदार्थ, यह ऊर्जा और कार्बोहाइड्रेड के लिए कैलोरी प्रदान करते है जो कि शुगर मे परिवर्तित होते है जिससे ऊर्जा मिलती है। फलों और सब्जियाँ (विटामिन और खनिज का महत्वपूर्ण स्त्रोत) फाइबर युक्त भोजन है तथा साथ ही साथ माँस, मछली, अण्डे, सेम आदि प्रोटिन के अन्य गैर डेयरी स्त्रोत है।

कुपोषण के लिए परीक्षण - 1. डायग्नोस्टिक टेस्ट और इमेजिंग अध्ययन तथा बी.एम.आई.(बॉडी मास इंडेक्स)। 2. नियमित रक्त परीक्षण। 3. डायराइड फक्शन परीक्षण। 4. क्रोहन रोग या सिलिअक के लिए आंत का अनुमान। 5. कैल्शियम, फास्फेट, जिंक और विटामिन स्तर। 6. कोलेस्ट्रॉल और एल्बिन का स्तर।

शिशु मृत्यु दर तथा कुपोषण का रोकथाम - विश्व स्तर की समस्या कुपोषण को रोकने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन, युनिसेफ तथा विश्व खाद्य कार्यक्रम संचालित है। भारत सरकार पोषण मिशन चला रही जिसमें 0-6 वर्ष के बच्चों व गर्भवती महिलाओं एवं धात्री महिलाओं के स्वास्थ्य व पोषण स्तर का सुधार किया जा सके। सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा एकीकृत बाल विकास सेवा योजनासंचालित है।

छत्तीसगढ़ में शिशु मृत्यु दर में कमी आई है, जिसका कारण संस्थागत प्रसव का बढ़ना, स्पेशल न्यूबार्न केयर युनिट का संचालन व नयूबार्न स्पेलाईजेशन युनिट, न्यूबार्न केयर कार्नर का संचालन एवं नियमित टीकाकरण है। प्रदेश में सार्वजनिक स्वास्थ्य और आंगनबाड़ी सेवाओं के विस्तार और उनमें कसावट से उत्साहजनक नतीजे प्राप्त हुए है। राज्य में मातृ मृत्यु दर व शिशु मृत्यु दर मे काफी कमी आई है। अस्पतालों में प्रसव 18 प्रतिशत से बढ़कर 74 प्रतिशत तक पहुँच चुका है जिसमें आँगनबाड़ी केन्द्र की भूमिका अहम है। आँगनबाड़ी केन्द्र मे बच्चों को दूध, दलिया, रेडी टू ईट सहित कई पौष्टिक आहार कुपोषण दूर करने के लिए दिए जाते है।

नवा जतन मध्यान भोजन के साथ-साथ प्रोटीन युक्त नाश्ता (बिलासपुर पहला जिला) तथा सुपोषण अभियान (2 अक्टूबर 2019 से प्रारंभ किया जाना है।) जुलाई 2017 से वर्तमान में बस्तर एवं दंतेवाड़ा में क्रिन्यावित है। अतिकुपोषित बच्चों के लिए पोषण पुर्नवास केन्द्र खोला गया है। यदि हम वास्तव में इस समस्या से निजात पाना चाहते है तो हमें जागरूक होना पड़ेगा क्योंकि जागरूकता से ही कुपोषण तथा मातृ-शिशु मृत्यु पर अंकुश लगाया जा सकता है।

सूर्यकांत तिवारी
रामपुर, तहसील कुरूद, जिला-धमतरी (छ.ग.)